INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

(मुख्य परीक्षा हेतु)

Level – 1

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 1

राजस्थान का भूगोल + इतिहास + संस्कृति + भाषा

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – I हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – I)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें**/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/r46kn5

Online Order करें - https://shorturl.at/gilw7

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का भूगोल	
1.	स्थिति एवं विस्तार	1
2.	राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	15
3.	मानसून तंत्र एवं जलवायु	25
4.	अपवाह तंत्र - नदियाँ, झीलें एवं बाँध	31
5.	राजस्थान की वन संपदा	54
6.	वन्य जीव-जंतु वन्य जीव संरक्षण एवं अभ्यारण्य	58
7.	मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	62
8.	राजस्थान की प्रमुख फसलें	65
9.	जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता, और लिंगानुपात	71
10.	राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र	76
11.	धात्विक एवं अधात्विक खनिज	79
12.	राजस्थान के ऊर्जा संसाधन :	87
13.	राजस्थान के पर्यटन स्थल	96
14.	राजस्थान में यातायात के साधन	102
15.	पशुधन एवं पशु मेले	108
	इतिहास एवं संस्कृति	
1.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ	115
2.	राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश	119
3.	प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था	164
4.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	172
5.	1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान आधुनिक राजस्थान	183

6.	राजस्थान में जनजाति एवं किसान आंदोलन	190
7.	प्रजामण्डल	201
8.	राजस्थान का एकीकरण	211
	कला एवं संस्कृति	
1.	राजस्थान की स्थापत्य कला, किले स्मारक महल एवं हवेलियाँ	215
2.	राजस्थान के मेले एवं त्यौहार	224
3.	लोक कला, लोक संगीत	234
4.	लोक नाट्य एवं लोक नृत्य	237
5.	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत	244
6.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय	253
7.	लोक देवता एंव लोक देवियाँ	259
8.	राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण	266
9.	राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प	267
	राजस्थानी भाषा	
1.	राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ	274
2.	प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ एवं प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार	276
3.	राजस्थनी संत साहित्य एवं लोक साहित्य	279

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – 1

स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान का विस्तार –

इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए-

1. भूमध्य रेखा
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश रेखा
5. देशांतर रेखा

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए-

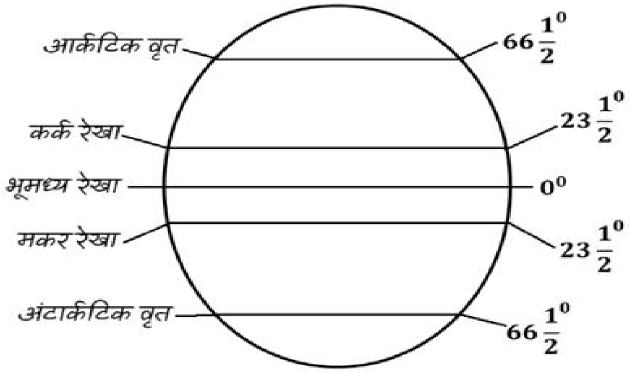

(मानचित्र न. 1)

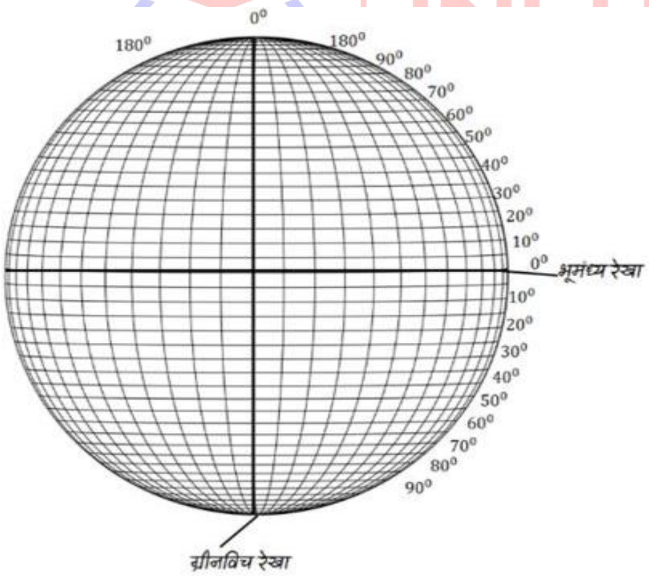

(मानचित्र न. – 2)

नोट -भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा हैयह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

- इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा कहा जाता है।
- विषुवत रेखा के उत्तरी ओर पर कर्क रेखा है व दक्षिण की ओर पर मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी/ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "**उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम**"में विभाजित किया गया है । इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते है।

- **अक्षांश रेखाएं-** वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अथार्त भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र -1)
  ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180 डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।
- **देशांतर रेखाएं-** उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएं कहा जाता है। ग्रीनविच, जहां ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है, से गुजरने वाली याम्योत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरु की जाए। इस याम्योत्तर को प्रमुख याम्योत्तर कहते है। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180 डिग्री पूर्व या 180 डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक '**भारत एवं विश्व का भूगोल**' पढ़ें"।राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30°12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69'30" से 78'17" पूर्वी देशांतर है। (देखें मानचित्र A, B)

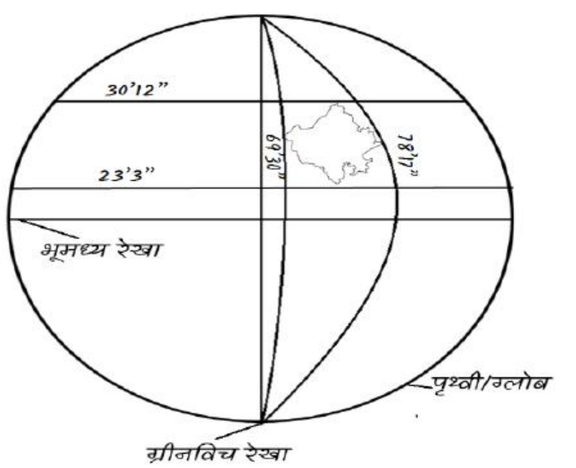

(मानचित्र-A)

नोट- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार ***7°9"(30°12" 23°3")*** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार ***8°47" (78°17" 69°30")*** है।

1° = 4 मिनट **1" =111.4 किलोमीटर होता है।**

- राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।
- 1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग होने हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया।
- 2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 68,548,437थी जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।
- ***कर्क रेखा राजस्थान में स्थितः-***

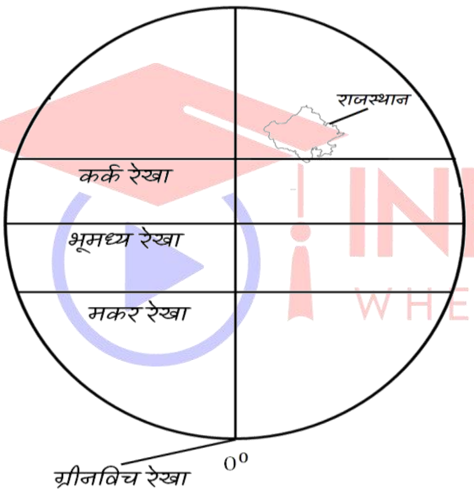

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-

- **(राजस्थान, मध्यप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, गुजरात, मिजोरम, त्रिपुरा)**
- राजस्थान में कर्क रेखा बांसवाड़ा जिले के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है, इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिले को भी स्पर्श करती है अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।
- राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है। राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।
- राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बांसवाड़ा है।
- भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है। जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।
- राजस्थान में बांसवाड़ा जिले में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

  कारण- बांसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है तथा श्रीनगर सबसे उत्तर में स्थित है।

  राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बांसवाड़ा होना चाहिए एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है।

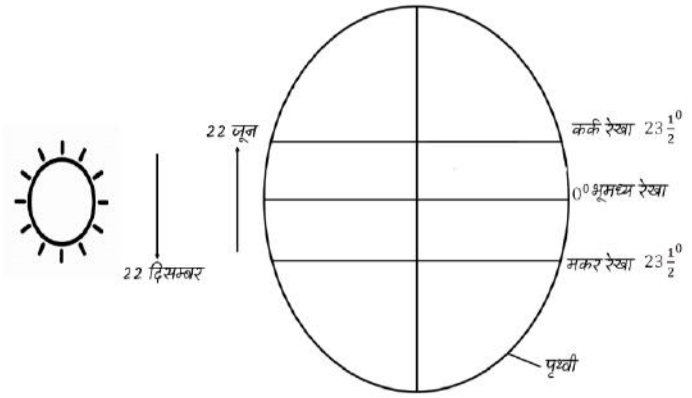

मानचित्र को ध्यान से समझिए

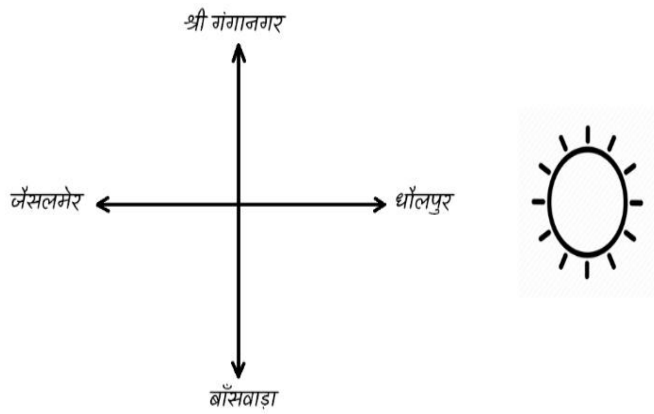

नोट- जैसे कि ऊपर दिए गए मानचित्र में समझाया है कि, सूर्य 21 जून को सीधा कर्क रेखा पर और 22 दिसंबर को सीधा मकर रेखा पर चमकता है। इसके अलावा 21 मार्च और 23 सितंबर को सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है। अर्थात् 21 जून को कर्क रेखा पर सीधे चमकने के बाद जुलाई, अगस्त, सितंबर .... दिसंबर में जैसे-जैसे समय बढ़ता जाता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश मकर रेखा की ओर बढ़ता जाता है, फिर 22 दिसंबर तक मकर रेखा पर पहुंचने के बाद जनवरी, फरवरी........जून में जैसे-जैसे समय बढ़ता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा की ओर बढ़ता है।

अर्थात सूर्य की सीधी किरणें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पड़ती है इस क्षेत्र को उष्णकटिबंधीय क्षेत्र कहते है। ध्रुवों पर सूर्य की किरणें ना पहुंचने के कारण वहां वर्ष भर बर्फ पाई जाती है।

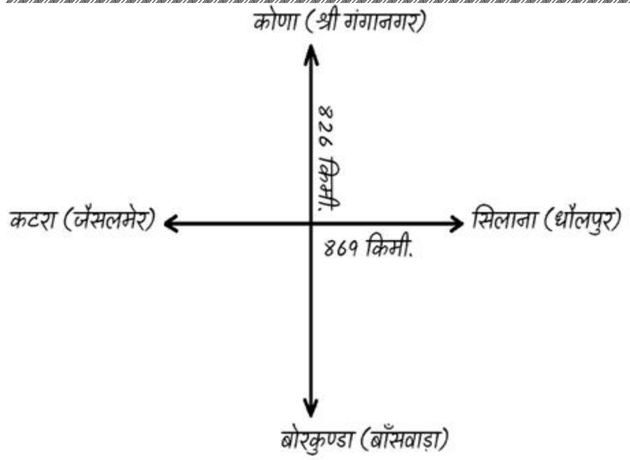

इस प्रकार राजस्थान का सबसे दक्षिणी जिला बांसवाड़ा में सूर्य की सबसे ज्यादा सीधी किरणें पड़ती है (कर्क रेखा के सबसे नजदीक होने के कारण) इसलिए बांसवाड़ा को राजस्थान का सबसे गर्म जिला होना चाहिए, लेकिन चूरु सबसे गर्म जिला है (कारण-रेत) । इसी प्रकार सबसे उत्तरी जिला श्रीगंगानगर में सूर्य की सबसे ज्यादा तिरछी किरणें पड़ती है, इसलिए श्रीगंगानगर को राजस्थान का सबसे ठंडा जिला होना चाहिए लेकिन चूरु सबसे ज्यादा ठंडा जिला है (कारण-जिप्सम)

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

विस्तार:-

- राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिले के कोणा गांव से दक्षिण में बांसवाड़ा जिले की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।
- इसी प्रकार पूरब से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूरब में धौलपुर जिले के जगमोहनपुरा की ढाणी, सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिले के कटरा गांव (सम-तहसील) तक है।

आकृति

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है। राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतरराष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखा

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सीरिल एम. रेडक्लिफ को माना जाता है। इसकी स्थापना 14/15 अगस्त 1947 को की गई। इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है। रेडक्लिफ रेखा पर भारत के **तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश** स्थितहैं।

1. पंजाब (547 कि.मी.)
2. राजस्थान (1070 कि.मी.)
3. गुजरात (512 कि.मी.)

केंद्र शासित प्रदेश

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी. लद्दाख व J&K दोनों)
2. लद्दाख

- रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा- **राजस्थान** (1070 कि.मी.)
- रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय- **श्रीनगर**
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दुर राजधानी मुख्यालय- **जयपुर**
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य- **राजस्थान**
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य- **पंजाब**
- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा **1070 कि.मी.** है। जो **राजस्थान के पांच जिलों** से लगती है।

1. श्रीगंगानगर
2. बीकानेर
3. फलौदी
4. जैसलमेर- 464 कि.मी.
5. बाड़मेर- 228 कि.मी.

- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के **हिन्दूमल कोट** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती हैं।
- राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – **बहावलपुर**
- राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- **खैरपुर**

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय –श्रीगंगानगर
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला – **श्रीगंगानगर**

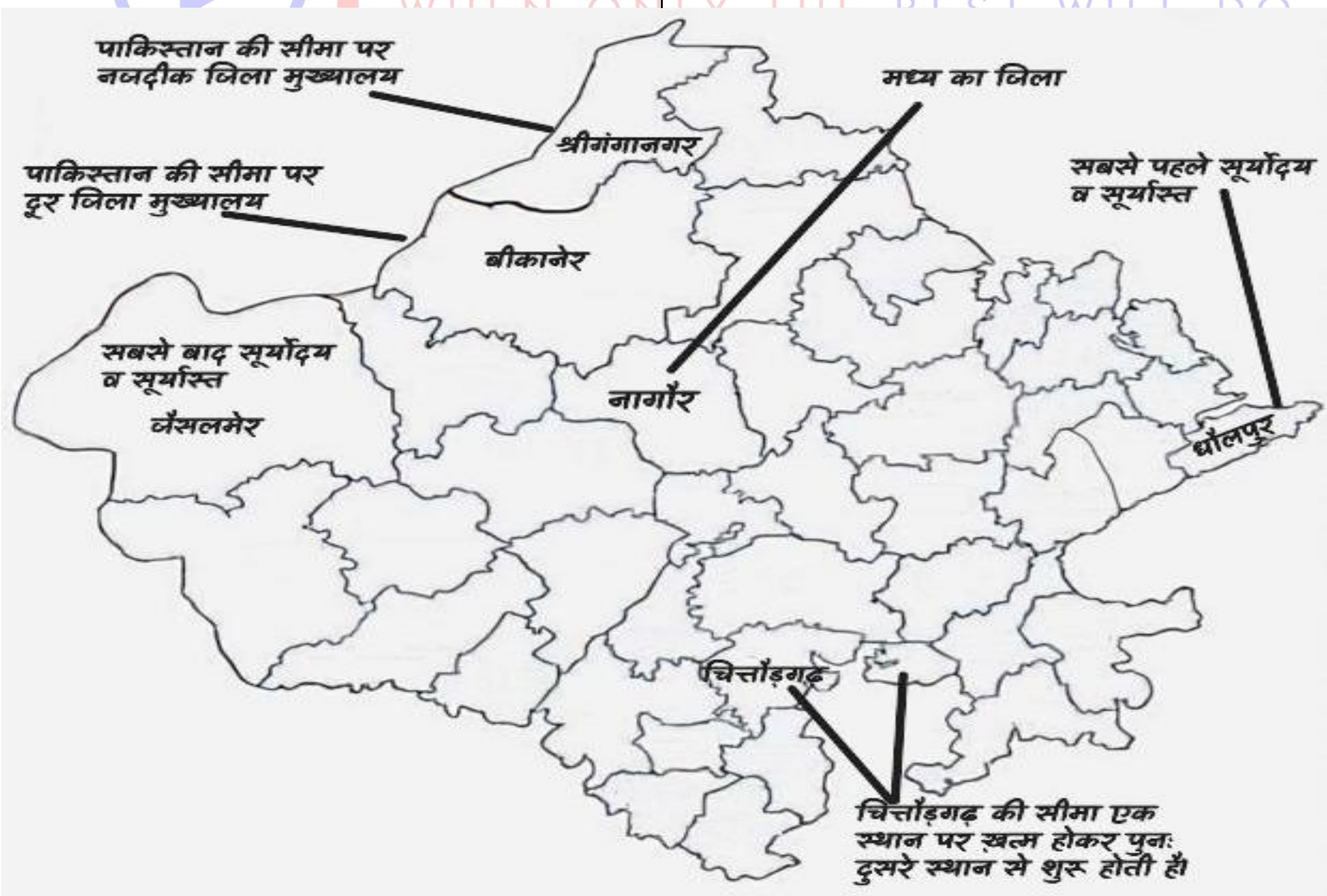

उत्तरप्रदेश (877 किमी॰)

- राजस्थान के तीन जिलों (डीग, भरतपुर, धौलपुर) की सीमा उत्तरप्रदेश के दो जिलों (मथुरा व आगरा) से लगती है।
- उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा भरतपुर व न्यूनतम सीमा डीग की लगती है।
- उत्तरप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भरतपुर व छोटा जिला डीग है।

मध्यप्रदेश (1600 किमी॰)

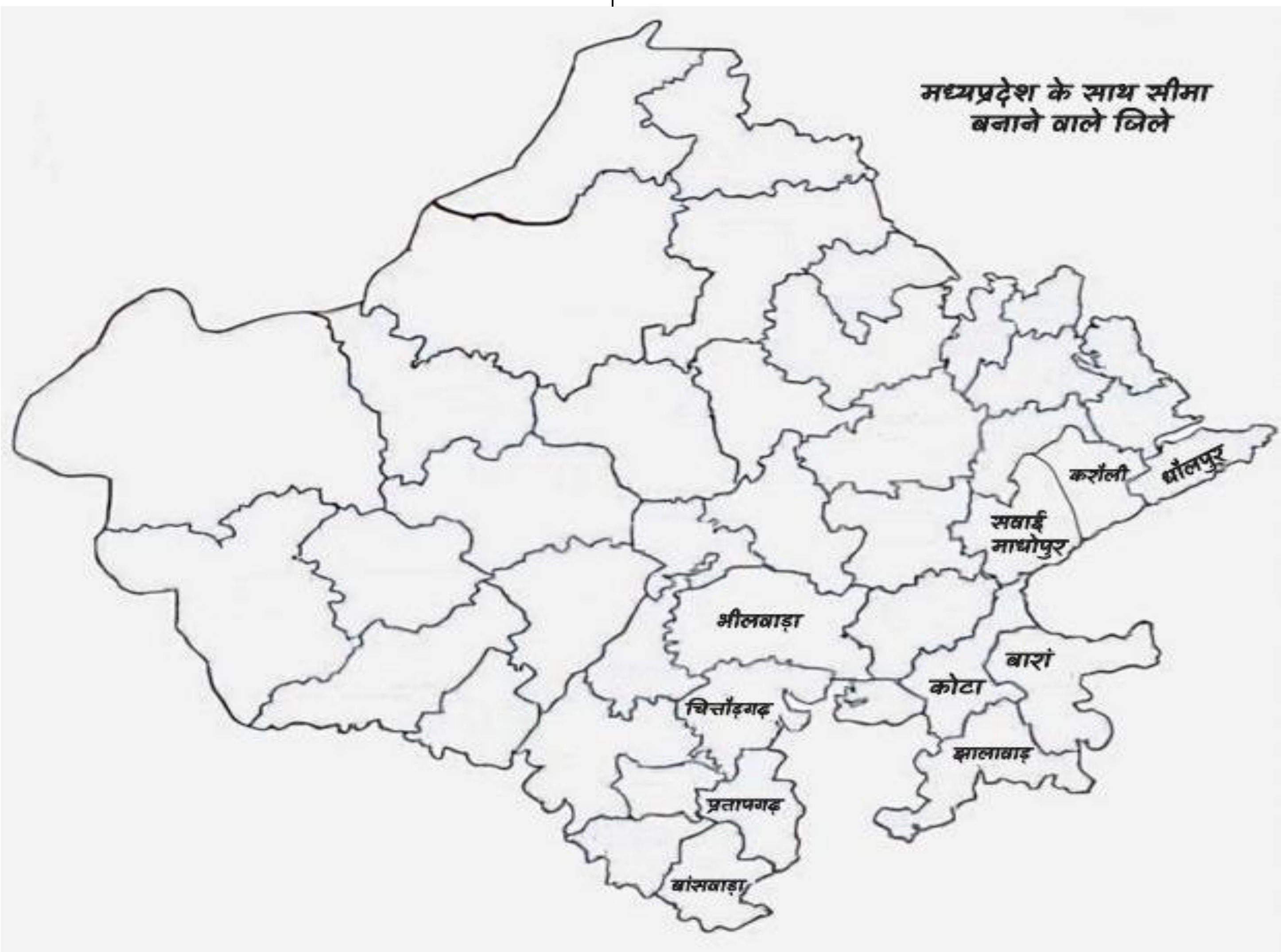

- राजस्थान के 10 जिलों (धौलपुर, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, कोटा, झालावाड, बारां, बांसवाडा, करौली) की सीमा मध्यप्रदेश के 10 जिलों की सीमा से लगती है। (झाबुआ, रतलाम, मंदसौर, निमच, अगरमालवा, राजगढ, गुना, शिवपुरी, श्योपुर, मुरैना) मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा झालावाड़ व न्यूनतम भीलवाड़ा की लगती है तथा सीमा के नजदीक मुख्यालय धौलपुर व दूर जिला मुख्यालय भीलवाड़ा है।
- मध्यप्रदेश राजस्थान की दक्षिण पूर्व दिशा में स्थित है।
- नीमच जिले के साथ राजस्थान की तीन दिशाओं से सीमा लगती है।

गुजरात (1022 किमी०)

- राजस्थान के 6 जिलों (बाड़मेर, जालोर, सिरोही, उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा) की सीमा गुजरात के 6 जिलों से लगती है। (कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, माहीसागर, दाहोद) गुजरात के साथ सर्वाधिक सीमा उदयपुर व न्यूनतम सीमा बाड़मेर की लगती है तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय डूंगरपुर व दूर मुख्यालय बाड़मेर है।
- गुजरात सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला बाड़मेर व छोटा जिला डूंगरपुर है।
- राजस्थान के पांच पड़ोसी राज्य है। पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात

शोर्ट ट्रिक

गुजरात की सीमा से लगने वाले राजस्थान के जिले है।

"उदय डूंगर पर बासि बाड़ा जला"

सूत्र		जिला
उदय	-	उदयपुर
डूँगर पर	-	डूंगरपुर
बां	-	बाँसवाड़ा
सि	-	सिरोही
बाड़	-	बाड़मेर
जला	-	जालौर

राजस्थान की सीमा से लगने वाले गुजरात के जिले है।

"सादा पँचक बना माही"

सूत्र		जिला
सा	-	साबरकाठा
दा	-	दाहोद
पंच	-	पंचमहल
क	-	कच्छ
बना	-	बनासकंठा
माही	-	माहीसागर

अन्य तथ्य

26 जनवरी 1950 को संवैधानिक रूप से हमारे राज्य का नाम राजस्थान पड़ा।

राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में 1 नवम्बर 1956 को आया । इस समय राजस्थान में कुल 26 जिले थे।

- **26 वाँ जिला** – अजमेर - 1 नवम्बर, 1956
- **27 वाँ जिला** – धौलपुर - 15 अप्रैल, 1982, यह भरतपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- **28 वाँ जिला**- बारां - 10 अप्रैल, 1991, यह कोटा से अलग हो कर नया जिला बना।
- **29 वाँ जिला** – दौसा - 10 अप्रैल, 1991, यह जयपुर से अलग होकर नया जिला बना।

राजस्थान के प्रमुख बाँध एवं विभिन्न नदी घाटी परियोजनाएं

(i) भाखड़ा – नांगल परियोजना

- भाखड़ा – नांगल परियोजना सतलज नदी पर बनी हुई है। यह देश की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना है जो कि राजस्थान, पंजाब एवं हरियाणा की मिश्रित परियोजना है।
- इस परियोजना के निर्माण का सर्वप्रथम विचार 1908 में गवर्नर "सर लुईस डेन" के द्वारा दिया गया था और इसका निर्माण कार्य 1948 के बाद प्रारंभ हुआ।
- इस परियोजना का निर्माण दो चरणों में पूरा किया गया-

1. भाखड़ा बाँध

- **भाखड़ा बाँध यह देश का तीसरा (वर्तमान में) सबसे ऊँचा बाँध है** जिसकी आधार शिला 17 नवंबर 1955 को देश के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के द्वारा रखी गई जो कि अक्टूबर 1960 में अमेरिकी बाँध निर्माता हार्वे स्लोकम के निर्देशन में बनकर तैयार हुआ।
- इस बाँध को 22 अक्टूबर 1963 को जवाहर लाल नेहरू ने देश को समर्पित कर दिया था।
- **इस बाँध का निर्माण सतलज नदी पर हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में किया गया है।**
- इस बाँध की ऊँचाई 255.55 मीटर (लगभग 226 मीटर) तथा इसकी लंबाई लगभग 518.16 मीटर तथा इसकी चौड़ाई लगभग 9.14 मीटर है।
- **इस बाँध के पीछे के जलाशय को गोविंद सागर झील कहा जाता है, जो कि भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है।**
- **भारत का दूसरा सबसे ऊँचा बाँध टिहरी बाँध पहला सरदार सरोवर बाँध है, जो कि नर्मदा नदी पर गुजरात में बना हुआ है।**
- इस बाँध के दोनों किनारों पर विद्युत संयंत्र स्थापित किए गए हैं जिनकी कुल विद्युत क्षमता पहले की 540 मेगावाट दूसरी की 785 है।

2. नांगल बाँध

- यह बाँध पंजाब के जिले में सतलज नदी पर स्थित है। यह भाखड़ा बाँध से 12 किलो मीटर दूर है।
- इस बाँध की लंबाई लगभग 340.8 मीटर है। तथा ऊँचाई लगभग 29 मीटर है।
- इस बाँध पर दो विद्युत संयंत्र लगाए गए हैं - 1. गंगेवाल- 83.58 मेगावाट, 2. कोटला 84.57 मेगावाट।
- **इस बाँध से सिंचाई के लिए दो नहरें निकाली गई हैं- 1. भाखड़ा नहर 2. बारी -बिस्ट दोआब।**
- भाखड़ा – नांगल समझौता 1959 के अनुसार **राजस्थान को इसका 22.15% हिस्सा** प्राप्त होता है।
- इस परियोजना की कुल विद्युत क्षमता 1493 मेगावाट एवं सिंचाई क्षमता 14.6 लाख हैक्टेयर है जिसमें से राजस्थान को 2.3 लाख हैक्टेयर पर सिंचाई उपलब्ध होती है एवं 227. 32 मेगावाट विद्युत प्राप्त होती है।
- राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में इस परियोजना से सिंचाई सुविधा एवं सीकर, चूरू, झुंझुनूं, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर एवं बीकानेर को पेयजल की आपूर्ति कराई जाती है।
- भाखड़ा नांगल बाँध परियोजना को पंडित जवाहर लाल नेहरू ने "**चमत्कारी विराट वस्तु**" की संज्ञा दी थी।

(ii) इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना

- इस परियोजना का निर्माण कार्य / आधार शिला तत्कालीन गृहमंत्री श्री गोविंद वल्लभ पंत ने 31 मार्च, 1958 में रखी। लेकिन नहर में सर्वप्रथम पानी तत्कालीन उप राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन ने अक्टूबर, 1961 को नोरंग देसर (हनुमानगढ़) से छोड़ा।
- **इस परियोजना का मूल नाम' राजस्थान नहर'** था। जिसे 2 नवम्बर, 1984 को परिवर्तित करके इन्दिरा गाँधी नहर कर दिया गया।
- **इसे "राजस्थान की मरु गंगा व राज्य की जीवन रेखा"** आदि नामों से जाना जाता है।
- **इस परियोजना के जनक / योजनाकार कँवर सेन' कहलाते हैं,** जिन्होनें 1948 में अपनी पुस्तक "बीकानेर राज्य के लिए पानी की आवश्यकता" में इसका प्रारूप रखा।
- उन्हें इस नहर को बनाने की प्रेरणा "गंगनहर" से मिली। इसका उद्गम व जल स्रोत सतलज व व्यास नदी के संगम पर हरिके बैराज बाँध (पंजाब के फिरोजपुर) से हुआ।

यह परियोजना दो चरणों में पूरी हुई-

- **प्रथम चरण के तहत "राजस्थान फीडर" 204 किमी.** (150 किमी. पंजाब में, 20 किमी. हरियाणा में व 34 किमी. राजस्थान में) **हरिके बैराज से मसीतावाली हैड (हनुमानगढ़) तक** 1992 में पूरी हो गई।
- **दूसरे चरण के तहत 256 किमी. का निर्माण करना था, जिसे बाद में 445 किमी. कर दिया। यह चरण मसीतावाली हैड (हनुमानगढ़) से मोहनगढ़ (जैसलमेर) तक था जिसे 165 किमी. और बढ़ाकर अंतिम स्थान गडरारोड़ (बाड़मेर) कर दिया जिसे जीरो पॉइन्ट कहा जाता है।**

(यह राजस्थान में 480 किमी. व बाहर 169 किमी. फैली हुई है, इस प्रकार इस की कुल लम्बाई 649 किमी. है।)

- **इंदिरा गाँधी नहर परियोजना से राज्य के जिलों (श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, फलौदी, बाड़मेर, नागौर, डीडवाना-कुचामन एवं झुंझुनूं) को पेयजल मिलेगा।**

जिसके लिए इस से तीन लिफ्ट नहरें निकाली गई हैं-

- **राजीव गाँधी लिफ्ट नहर परियोजना** -जिसे जोधपुर की जीवन रेखा कहते हैं जिससे जोधपुर व बाड़मेर के गाँवों को पेयजल दिया जाता है।

- ***कँवर सेन लिफ्ट नहर-*** *जिसे बीकानेर की जीवन रेखा कहते हैं। गंधेली सहवा परियोजना जर्मनी के के.पी. डब्ल्यू के सहयोग से शुरु।*
- ***चौधरी कुम्भा राम आर्य लिफ्ट नहर*** *- (प्राचीन नाम नोहर सोहवा लिफ्ट नहर) यह सहायक नहरों सहित सबसे लम्बी लिफ्ट नहर (666.5किमी.) है अन्यथा कँवर सेन लिफ्ट नहर सबसे लम्बी (151 किमी.) है। इससे हनुमानगढ़, बीकानेर, चुरु व झुंझनूं मुख्यतः लाभान्वित होते है ।*
- ***कॅवर सेन लिफ्ट नहर-*** *(प्राचीन नाम लूण करणसर लिफ्ट नहर) यह* ***सबसे लम्बी लिफ्ट नहर है ।*** *जिससे बीकानेर व श्रीगंगानगर जिले की जलापूर्ति होती है। इसे बीकानेर की जीवन रेखा कहते हैं ।*
- ***पन्नालाल बारूपाल लिफ्ट नहर-*** *(प्राचीन नाम गजनेर लिफ्ट नहर) इससे बीकानेर, डीडवाना-कुचामन व नागौर जिले की जलापूर्ति होती है।*
- ***वीर तेजाजी लिफ्ट नहर-*** *(प्राचीन नाम बांगड़ सर लिफ्ट नहर) यह सबसे छोटी लिफ्ट नहर है जिससे बीकानेर जिले की जलापूर्ति होती है।*
- ***डॉ. करणी सिंह लिफ्ट नहर-*** *(प्राचीन नाम कोलायत लिफ्ट नहर)। इस से बीकानेर व फलौदी जिले की जलापूर्ति होती है।*
- ***गुरु जम्भेश्वर लिफ्ट नहर-*** *(प्राचीन नाम फलौदी लिफ्ट नहर) है जिससे जैसलमेर, बीकानेर, फलौदी व जोधपुर जिले की जलापूर्ति होती है।*
- ***जयनारायण व्यास लिफ्ट नहर-*** *(प्राचीन नाम पोकरण लिफ्ट नहर) जिससे जैसलमेर, फलौदी व जोधपुर जिले की जलापूर्ति होती है।*

<u>गंग नहर परियोजना (बीकानेर नहर)</u>

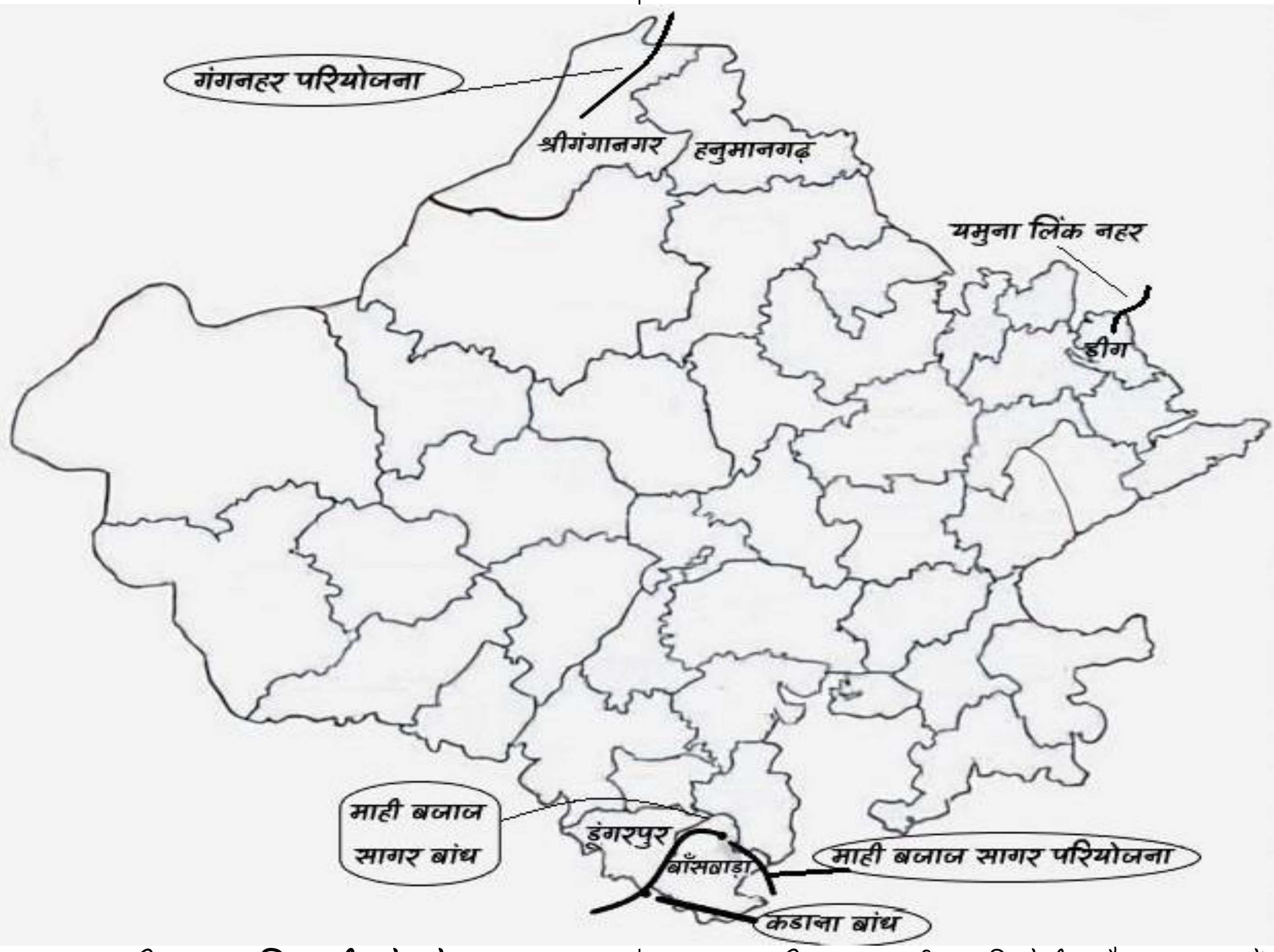

- *इस नहर की* ***आधार शिला बीकानेर के महाराजा गंगासिंह (राजस्थान का भगीरथ)*** *द्वारा 5 सितम्बर, 1921 ई० में रखी गई, तो इसका उद्घाटन 26 अक्टूबर, 1927 ई० को वायसराय लॉर्ड इरविन ने किया।*
- *यह राज्य की पहली नहर सिंचाई परियोजना थी, जिसे फिरोजपुर (पंजाब) के निकट हुसैनी वाला नामक स्थान पर सतलज नदी से निकाली गई।*
- *नहर की कुल लम्बाई 129 किलोमीटर है । राजस्थान में इसकी लम्बाई 17 किलोमीटर है । शेष 112 किमी. पंजाब में है।*
- *राजस्थान में इसका प्रवेश गंगानगर के संखा नामक स्थान से होता है। इसका समापन अनूपगढ़ तहसील के शिवपुर नामक स्थान पर होता है।*

यमुना लिफ्ट नहर (गुड़ गाँव नहर)

- यह नहर हरियाणा व राजस्थान की संयुक्त परियोजना है। इस नहर के निर्माण का मुख्य उद्देश्य मानसूनकाल में यमुना नदी के अतिरिक्त जल को उपयोग लाना है।
- 1966 में इसका निर्माण कार्य शुरू हुआ एवं 1985 में पुरा हो गया। यह नहर यमुना नदी में उत्तरप्रदेश के ओंखला से निकाली गई है।
- यह डीग जिले की कामा तहसील के जुरेरा (जुटेरा) गाँव में राजस्थान में प्रवेश करती है। इससे डीग की कामा व डीग तहसील की जलापूर्ति होती है।
- इसकी कुल लम्बाई 58 कि.मी. है। वर्तमान इसे यमुना लिंक परियोजना कहते हैं।
- कूएँ एवं नलकूपों से सिंचाई करने की दृष्टि से सबसे प्रमुख जिला जयपुर, तालाब से सर्वाधिक सिंचाई भीलवाड़ा, झरनों से सिंचाई बाँसवाड़ा में होती है, तो नहरों से सर्वाधिक सिंचाई श्रीगंगानगर जिले में होती है।

कडाना बाँध – यह **बाँध गुजरात के माही सागर जिले के रामपुरा गाँव में स्थित है।** इस पर 100 प्रतिशत गुजरात की लागत लगी है।

माही बजाज सागर परियोजना-

यह राजस्थान (45% जल) व गुजरात (55% जल) की संयुक्त परियोजना है। इसमें से बनने वाली विद्युत 100 प्रतिशत राजस्थान को मिलेगी।

- इस परियोजना को 1971 में स्वीकृति मिली थी । तथा 1983 में इंदिरा गाँधी ने सिंचाई का शुभारम्भ किया।
- इस परियोजना का **निर्माण माही नदी पर** किया गया। यह परियोजना आदिवासी क्षेत्र की सबसे बड़ी परियोजना है, जिसमें सर्वाधिक लाभ **बाँसवाड़ा** जिले को मिलता है।

माही बजाज सागर बाँध –

- इसका निर्माण माही बजाज सागर परियोजना के प्रथम चरण में बाँसवाड़ा की बोरखेड़ा तहसील के लोहरिया गाँव में किया गया।
- यह राज्य का सबसे लम्बा बाँध (3109 मीटर) है। यहाँ 1986 में 50 मेगावाट व 1989 में 90 मेगावाट विद्युत का उत्पादन होता था।
- वर्तमान समय में यहाँ 140 मेगावाट विद्युत का उत्पादन होता है।

कागदी पिक अप बाँध-

- **इसका निर्माण माही बजाज सागर परियोजना के द्वितीय चरण में किया गया।**
- इस बाँध से दो नहरें दायीं ओर भीखाभाई सागवाड़ा नहर व बायीं ओर आनन्द पुरी नहर निकलती है।

नर्मदा नहर परियोजना-

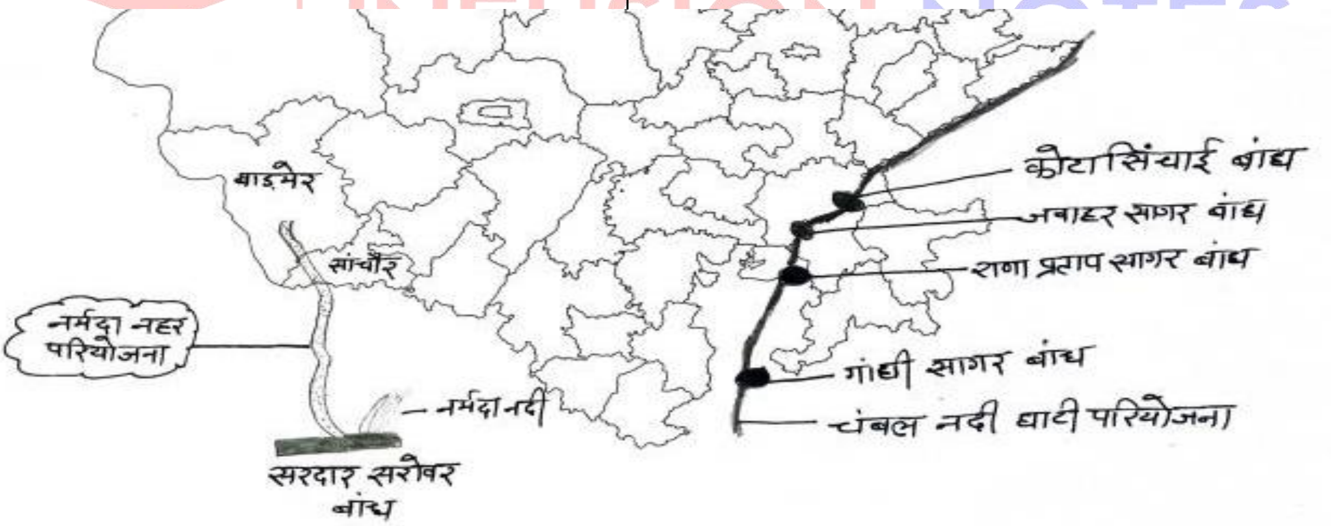

- यह परियोजना **गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र की संयुक्त परियोजना है। इस परियोजना को सरदार सरोवर बाँध परियोजना व मारवाड़ की "भागीरथी"** आदि नामों से जाना जाता है।
- इस परियोजना में राजस्थान का हिस्सा (0.5 / 01) एम.ए.एफ. है। (Imp: नर्मदा बचाओं आंदोलन का सम्बन्ध मेघा पाट कर से है) ।
- यह राजस्थान की पहली परियोजना है, जिससे सम्पूर्ण सिंचाई फव्वारा पद्धति / स्प्रिंकलर सिंचाई पद्धति से की जाती है ।
- इस परियोजना के तहत सरदार सरोवर बाँध से नहरों के द्वारा राजस्थान में पानी लाया गया है। जिसमें से गुजरात में 458 किलोमीटर व **राजस्थान में 74 किलोमीटर (सांचौर - 65 किमी, गुढ़ामलानी, बाड़मेर- 9 किमी)** का निर्माण करवाया गया है।
- इस प्रकार परियोजना की कुल लम्बाई 532 किलो मीटर है।
- इस परियोजना के तहत् सर्वप्रथम राजस्थान में सीलू गाँव (जालौर) में पानी 27 मार्च, 2008 को आया।
- राजस्थान में सकल फसलीकृत क्षेत्र का 33.6% सिंचित है।

लिफ्ट नहरें – सांचौर लिफ्ट नहर, भादरेड़ा लिफ्ट (जालौर), पनोरिया लिफ्ट बाड़मेर ।

रेलवे

मार्च 2020 में रेल मार्गों की कुल लम्बाई 5,998 किलोमीटर थी, जो कि मार्च 2021 के अंत तक 6.019 किलोमीटर (भारतीय रेलवे की वार्षिक पुस्तक 2020-21 के अनुसार) हो गयी है। राज्य में रेलमार्ग 68,103 किलोमीटर लम्बाई के भारतीय रेलमार्ग का 8.83 प्रतिशत है।

अध्याय – 15

पशुधन एवं पशु मेले

पशुपालन

राजस्थान में 20 वीं पशुगणना

- 20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में कुल पशुधन 56.8 मिलियन (5.68 करोड़) है। जो कि 2012 की 577 लाख (5.77 करोड़) था। इस प्रकार 2019 में कुल पशुओं की संख्या में 1.66 प्रतिशत की कमी देखी गई है।
- राजस्थान 568 लाख पशुओं के साथ भारत में दूसरे स्थान पर है। पहला स्थान उत्तर प्रदेश का है।
- राजस्थान गोवंश के मामले में 2012 के 133 लाख की तुलना में 2019 में 139 लाख पशुओं के साथ छठे स्थान पर है। गोवंश में 4.41% की वृद्धि हुई है।
- राजस्थान भैंसो के मामले में 2012 के 130 लाख की तुलना में 2019 में 137 लाख पशुओं के साथ दूसरे स्थान पर है। भैंसों में 5.53% की वृद्धि हुई है।
- राजस्थान भेड़ की संख्या के मामले में 2012 के 9.1 मिलियन की तुलना में 2019 में 79 लाख पशुओं के साथ चौथे स्थान पर है। भेड़ में 5% की कमी हुई है।
- राजस्थान बकरी के मामले में 2012 के 216.7 लाख की तुलना में 2019 में 208.4 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। बकरियों की संख्या में 3.81% की कमी हुई है।
- राजस्थान ऊंट के मामले में 2012 के 326लाख की तुलना में 2019 में 213 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। ऊंटों की संख्या में 34.69% की कमी हुई है।
- राजस्थान घोड़ों के मामले में 2012 के 38 लाख की तुलना में 2019 में 34 लाख पशुओं के साथ तीसरे स्थान पर है। घोड़ों की संख्या में में 10.85% की कमी हुई है।
- राजस्थान गधों के मामले में 2012 के 81 लाख की तुलना में 2019 में 23 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। गधों में 71.31% की कमी हुई है।

पशु	कुल संख्या (लाख)	अधिकतम	न्यूनतम
बकरी	208.4	बाड़मेर	धौलपुर
गाय	139	उदयपुर	धौलपुर
भैंस	137	जयपुर	जैसलमेर
भेड़	79	बाड़मेर	बांसवाड़ा
ऊँट	21.3	जैसलमेर	प्रतापगढ़
गधे	23	बाड़मेर	टोंक
घोड़े	34	बीकानेर	डूंगरपूर

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

8. **सांचौरी-** जालौर, उदयपुर, पाली, सिरोही में पाई जाती है। इसका प्रजनन केंद्र सांचौर है।

9. **मेवाती-** अलवर, डीग, जयपुर व भरतपुर में पाई जाती है।

- इसका प्रजनन केंद्र व राज्य का पहला सीमन बैंक बस्सी (जयपुर) में है।

विदेशी नस्लें

1. **जर्सी गाय** – यह नस्ल मूलतः **अमेरिकी** है । यह सर्वाधिक दूध देने हेतु प्रसिद्ध है।
2. **हॉलिस्टिन गाय** – हॉलिस्टिन गाय का मूल स्थान **हॉलैंड व अमेरिका** है। यह भी अधिक दूध देती है।
3. **रेड डेन गाय** – रेड डेन का मूल स्थान **डेनमार्क** है

भैंसों की नस्लें

1. **मुर्राह – राजस्थान में सर्वाधिक संख्या वाली नस्ल, भैंस की सर्वोत्तम नस्ल।**

- **प्रमुख क्षेत्र** - जयपुर, खैरथल-तिजारा, डीग, अलवर व भरतपुर

2. **जाफराबादी – सर्वाधिक शक्तिशाली** नस्ल।

- प्रमुख क्षेत्र – उदयपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा व सलूम्बर

3. **मेहसाणी** – मूल स्थान मेहसाणा।

- प्रमुख क्षेत्र – बाड़मेर, जालौर, सिरोही

4. **बदावारी / भदावरी** – मूल स्थान उत्तरप्रदेश

- राजस्थान में मुख्यतः भरतपुर व धौलपुर में पायी जाती है।

5. **सूरती** – इसका मूल स्थान गुजरात है।

- राजस्थान में मुख्यतः सिरोही व उदयपुर में पायी जाती है।

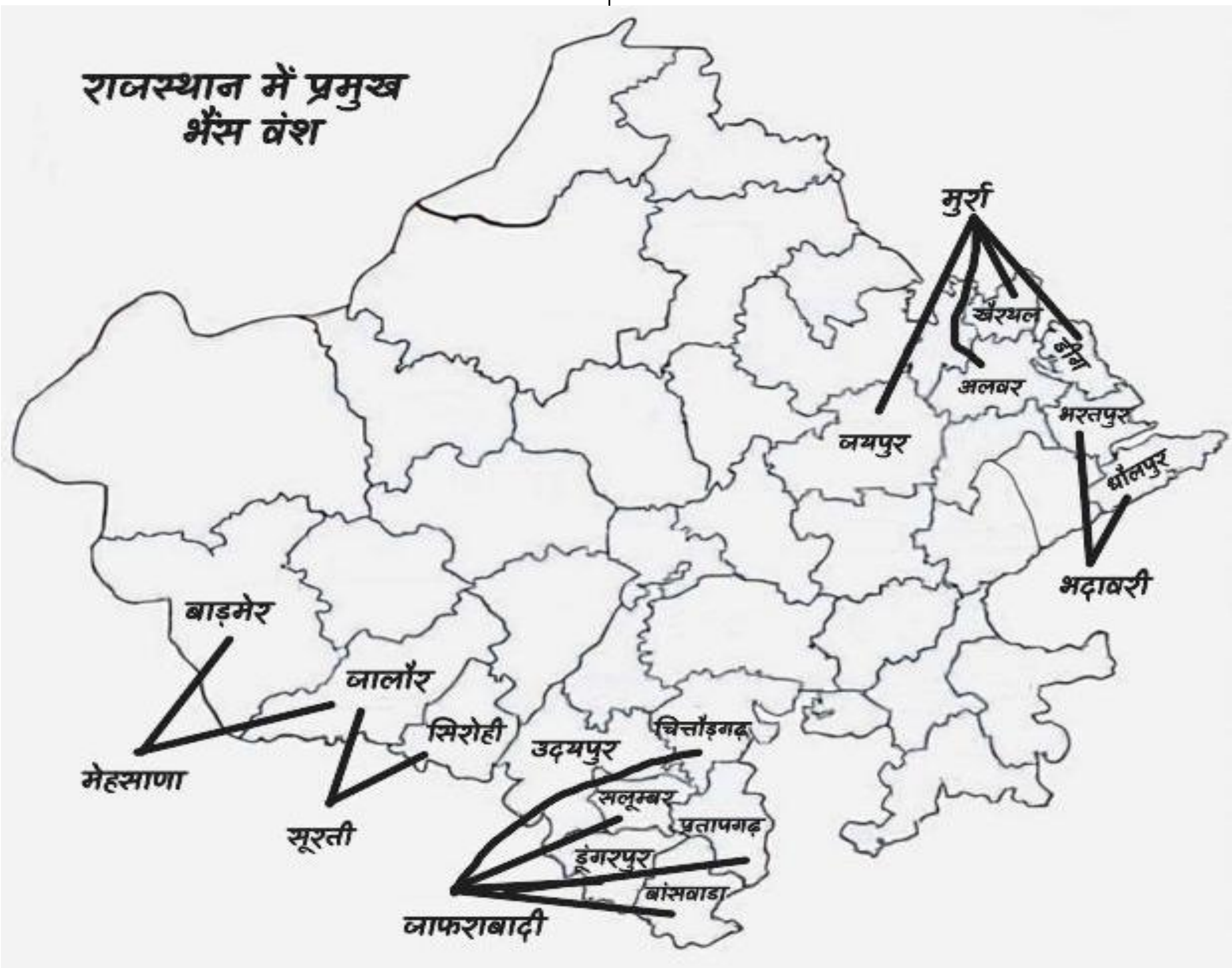

भेड़

- **देश में भेड़ों की संख्या के आधार पर राज्य का तीसरा स्थान है।**
- **सर्वाधिक भेड़ें बाड़मेर में** और **न्यूनतम बाँसवाड़ा में** पाई जाती हैं
- राजस्थान में ऊन मील बीकानेर में स्थित है।
- केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान – अविकानगर, मालपुरा (टोंक) में स्थित है।
- राजस्थान में भेड़ प्रजनन फार्म फतेहपुर (सीकर) व बांकलिया (नागौर) में स्थित है।
- राजस्थान में भेड़ ऊन प्रशिक्षण संस्थान जयपुर में स्थित है।

भेड़ों की नस्लें

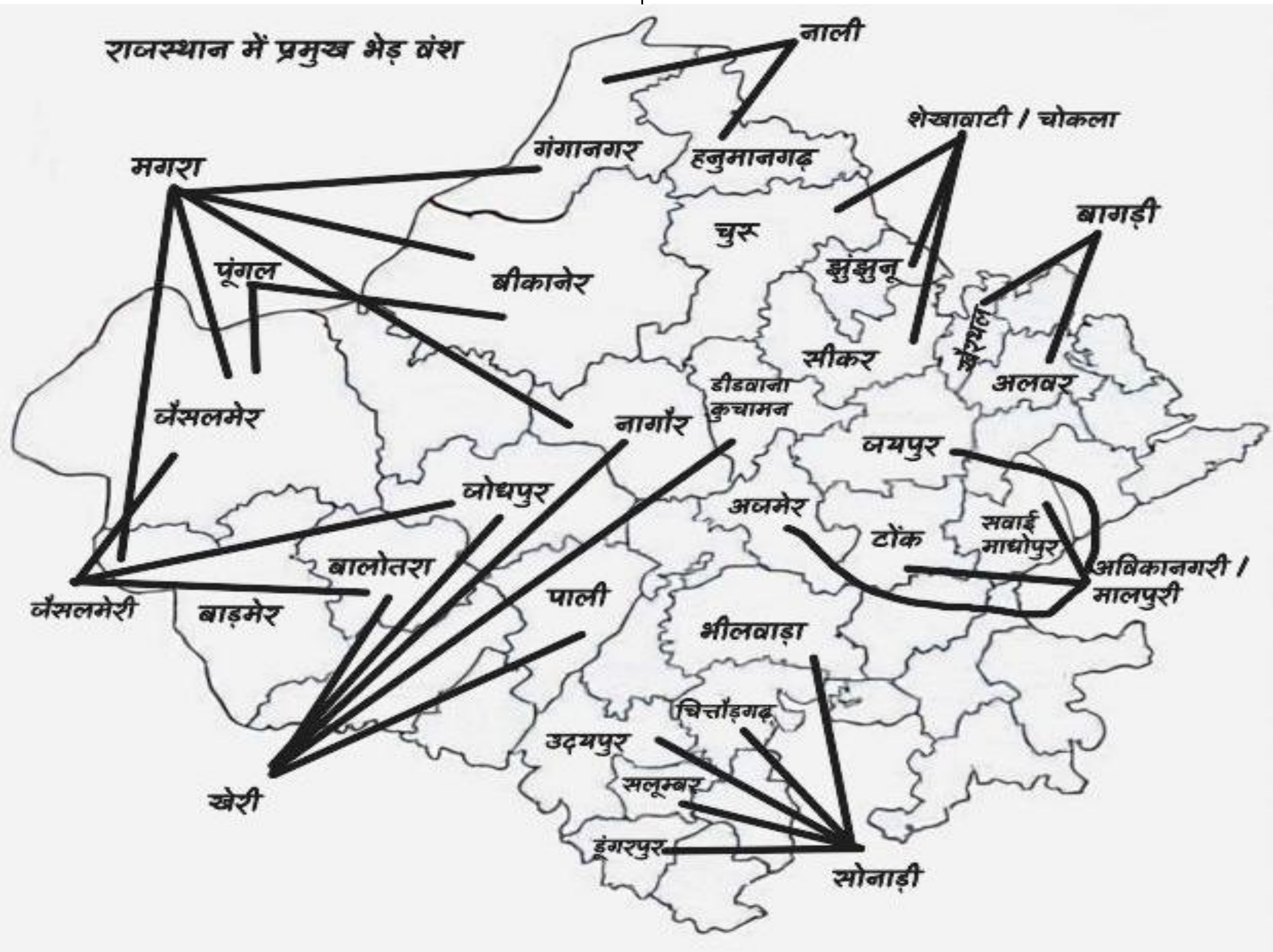

2. **चोकला भेड़**
- **झुंझुनूं, सीकर ,चूरू व बीकानेर** जिले में यह पाई जाती है ।
- इसका प्रजनन एवं अनुसंधान केंद्र **कोडमदेसर (बीकानेर)** में स्थित है।
- इसे छापर एवं शेखावाटी के नाम से भी जाना जाता है। इसे **भारत की मेरिनो** कहा जाता है ।
- इससे प्राप्त हुई ऊन सर्वोत्तम किस्म का है।

3. **मालपुरी / अविकानगरी भेड़**
- यह **जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, अजमेर में** पाई जाती है ।
- **ऊन मोटी** होने के कारण गलीचे के लिए उपयुक्त है।
- इसका अनुसंधान केंद्र जयपुर में स्थित है।
- इसे देसी नस्ल भी कहा जाता है।

4. **सोनाड़ी भेड़**
- यह नस्ल राजस्थान में **उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, सलूम्बर, बाँसवाड़ा, भीलवाड़ा** में पाई जाती है ।
- इसके कां लम्बे होते है।
- इसका प्रजनन व अनुसंधान केंद्र चित्तौड़गढ़ में स्थित है।
- इसका **उपनाम – चनोथर**

5. **पूगल भेड़**
- बीकानेर के पश्चिमी भाग व जैसलमेर, नागौर में पाई जाती है।
- इस नस्ल का उत्पति स्थल पूगल तहसील बीकानेर है।

6. **मगरा भेड़**
- इसे **बीकानेरी चोकला** भी कहा जाता है ।
- यह बीकानेर जैसलमेर, बाड़मेर, श्रीगंगानगर और नागौर जिले में पाई जाती है।

7. **नाली भेड़**
- यह नस्ल मुख्य रूप से श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में पाई जाती है ।
- इसकी **ऊन घने व लंबे रेशे** वाली होती है।
- इसका अनुसंधान केंद्र हनुमानगढ़ में है।

8. **मारवाड़ी भेड़**
- जोधपुर, बाड़मेर, जालौर, नागौर पाली, सिरोही में पाई जाती है।
- राजस्थान में इस नस्ल की सर्वाधिक भेड़ पायी जाती है।
- इस नस्ल की भेड़ में सर्वाधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है।
- राजस्थान में जोधपुर में इसका अनुसंधान केंद्र है।

कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.) :-

- यह लेख राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भस्याम मंदिर (मामादेव का मदिर - वर्तमान नाम) में संस्कृत भाषा एवं नागरी लिपि में पांच शिलाओं पर उत्कीर्ण है। । इसमें भौगोलिक स्थिति का, जनजीवन का, एकलिंग मंदिर का वर्णन, चित्तौड़ का वर्णन- (चित्रांग ताल, दुर्ग, वैष्णव तीर्थ के रूप में) किया गया है।
- इसमें मुख्यत: कुम्भा के विजयों का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसका रचयिता कान्हा व्यास है। जबकि डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार इसका रचयिता महेश भट्ट है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति (1652) :-

- यह जगदीश मंदिर, उदयपुर में उत्कीर्ण है।
- इसमें बापा से साँगा तक की उपलब्धियों का वर्णन है।
- यह मंदिर जगतसिंह प्रथम द्वारा बनाया गया।
- यह पंचायतन शैली का लेख है। जिसे अर्जुन की निगरानी में तथा सूत्राकार भाणा व उसके पुत्रा मुकुन्द की अध्यक्षता में बनवाया गया।

राजप्रशस्ति (1676) :-

- यह प्रशस्ति राजसंमद झील के तट पर नौ चौकी स्थान के ताकों में 25 काली पाषाण शिलाओं पर पद्य संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है, यह विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति अभलेख है । इसका रचयिता तैलंग ब्राह्मण रणछोड़ भट्ट था। मेवाड़ के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है। यह प्रशस्ति जगतसिंह प्रथम तथा राजसिंह के काल की उपलब्धियां जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

राठौड़ वंश की शाखाएँ – धांधल, भडेल, धूहड़िया, हटडिया, मालावत, गोगादेव, महेचा, राठौड़, बीका, मेडतिया, बीदावत, बाल चांपावत, कांधलोत, उदावत, देवराजोत, गहड़वाल, करमसोत, कुम्पावत, मंडलावत, नरावत आदि ।

मारवाड़ का इतिहास

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'सिवाना दुर्ग'(बालोतरा) को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
किशनगढ़	1609 ई.	किशनसिंह

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं । इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ हैं साथ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।

महत्वपूर्ण तथ्य -

- मारवाड़ के राठौड़ वंश का संस्थापक / राठौड़ वंश का आदि पुरूष कहा जाता है।
- राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वती' थी।
- 13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बर्बाद कर दिया तो राव सीहा मारवाड़ चला आया।
- पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती है। इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गाँव (पाली) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्ध के दौरान हुई थी। इस लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया है।
- राव सीहा के पश्चात् उनका पुत्र आसनाथ गद्दी पर बैठा।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्व की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँड़ा (1383 – 1423)

- राव चूँड़ा विरमदेव का पुत्र था।
- राव चूँड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है। अपने पिता की मृत्यु के समय चूँड़ा छः वर्ष का था। इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला।
- चूँड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया।
- राव चूँड़ा ने डीडवाना-कुचामन में चूण्डासर कस्बा बसाया।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था।

रावल मल्लिनाथ

- राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा, बालोतरा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं।
- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

कान्हा (1423 – 1427) -

- चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।
- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता' के हाथों हुई थी।

राव रणमल, - (1427 – 1438) -

- राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था।
- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की।
- रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया। परन्तु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने।
- मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी। ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था। इस तरह रणमल का अंत हुआ।

राव जोधा (1438 – 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था।

मेहरानगढ़ दुर्ग

1. ज्ञात स्त्रोतों से यह विदित होता है कि मेहरानगढ़ की नींव का पहला पत्थर करणी माता (रिद्धि बाई) ने रखा था ।
2. इसकी नींव में राजा राम खड़ेला नामक व्यक्ति को जिंदा चुनवाया गया था ।
3. किपलिंग ने मेहरानगढ़ दुर्ग के लिए कहा कि – इस दुर्ग निर्माण शायद परियों व फरिश्तों ने किया था' ।
4. इसमें चामुण्डा माता का मंदिर, मानप्रकाश पुस्तकालय, फूलमहल , कीरत व धन्ना की छतरी इत्यादि के दर्शन होते हैं, तथा किलकिला, शम्भू बाण व गजनी खां, जो कि तोपों के नाम है, भी यहाँ देखने को मिलती है ।

राव सातल (1489 - 1492)

1. जोधा के पुत्र राव सातल ने सातलमेर कस्बा बसाया था। उसकी भटियाणी रानी फूलां में जोधपुर में कुलेलाव तालाब बनवाया ।
2. अजमेर के हाकिम मल्लू खाँ के साथ पीपाड़ (जोधपुर) के युद्ध में घायल हो जाने के कारण राव सातल की मृत्यु (1492 ई.) हो गई । इस युद्ध में राव सातल विजयी रहा था ।

घुड़ला नृत्य का इतिहास और सातलदेव

यह घटना पीपाड़ (जोधपुर) की है पीपाड़ में 140 कुंवारी कन्याएं गणगौर की पूजा कर रही थी । तभी वहां अजमेर के सूबेदार मल्लू खाँ का सेनापति घुड़ले खाँ आ गया और सभी कन्याओं को बंधक बना लिया । तब राव सातल देव ने घुड़ले खाँ पर आक्रमण कर सभी कन्याओं को मुक्त कराया तथा मुक्त होने की खुशी में कन्याएं नृत्य करने लगी । उस नृत्य को ही घुड़ला नृत्य कहा जाता है। यह घटना चैत्र कृष्ण अष्टमी को हुई तभी से इस तिथि को प्रतिवर्ष घुड़ला नृत्य किया जाता है । इस नृत्य की शुरुआत घुड़ले खाँ की पुत्री गिन्दोली ने की थी।

राव सूजा 1492 - 1515

- यह राव जोधा का दूसरा पुत्र था । इसके समय बीकानेर के राव बीका ने जोधपुर पर आक्रमण किया था ।

राव गांगा 1515 - 1532

- राव गांगा राव सूजा का पोता तथा राव बाघा जी का पुत्र था । तथा राव सूजा की मृत्यु के पश्चात् राव गंगा सिंहासन पर बैठे थे ।
- राव गांगा ने अपने पुत्र मालदेव को 1527 के खानवा के युद्ध में राणा साँगा की सहायता के लिए भेजा था।
- राव गांगा ने गांगेलाव तालाब, गांगा की बावड़ी व गंगश्याम जी के मंदिर का निर्माण करवाया । राव गंगा की सीसोदणी रानी उत्तमदे राणा साँगा की पुत्री थी । जोधपुर का पद्मसर तालाब इन्होंने ही बनवाया था ।
- राव गांगा ने सेवकी गाँव (जोधपुर) के युद्ध में (1529 ई.) बीकानेर के राव जैतसी की सहायता से अपने विद्रोही चाचा शेखा और नागौर के दौलत खाँ की सेनाओं को पराजित किया ।
- उसके पुत्र राव मालदेव ने उसकी हत्या कर दी ।
- राव मालदेव को मारवाड़ का पितृहन्ता भी कहा जाता है। हालांकि कुछ विद्वान इस मत से सहमत नहीं है ।

राव मालदेव (1532 – 1562)

- इतिहासकारों में राव मालदेव के पितृहन्ता होने को लेकर अलग अलग मत हैं ।
- पण्डित रेउ के अनुसार राव गंगा अफीम के नशे में महल की खिड़की से गिर पड़े।
- सोजत के किले में राज्याभिषेक के एक वर्ष बाद मालदेव जोधपुर गया ।
- समकालीन फारसी इतिहासकारों ने राव मालदेव को 'हशमत वाला बादशाह' कहा है।

मालदेव व रूठी रानी उमादे

- जैसलमेर के भाटी शासक लूणकरण की पुत्री उमादे का विवाह 1536 ई. में राव मालदेव के साथ हुआ था । परन्तु विवाह के बाद वह मालदेव से रूठकर अजमेर के तारागढ़ में रहने लगी । वह राजस्थान के इतिहास में रूठीरानी के नाम से प्रसिद्ध है । मालदेव की मृत्यु पर वह सती हो गई। राव मालदेव ने पोकरण और मेड़ता के दुर्गों का निर्माण तथा सोजत, नागौर और सिवाणा के दुर्गों का जीर्णोद्धार करवाया था।

मालदेव के प्रमुख विजय अभियान

- नागौर विजय (1533 ई.) नागौर के दौलत खाँ को हीराबाड़ी के युद्ध में पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया ।
- सिवाणा की विजय (1538 ई.) सिवाणा पर राव डूंगरसी का अधिकार था ।
- वीरमदेव को पराजित कर राव मालदेव ने (1538 ई.) में मेड़ता व अजमेर पर अधिकार कर लिया
- जालौर की विजय (1539 ई.)
- राठौड़ बीदा के नेतृत्व में मारवाड़ी सेना ने सिकन्दर खाँ को पराजित कर जालौर को जीत लिया ।
- भाद्राजूण और रायपुर पर अधिकार (1539 ई.) -.
- भाद्राजूण और रायपुर पर सींधलों का अधिकार था ।

बीकानेर विजय-पाहेबा का 1541 ई.

- पाहेबा का युद्ध मालदेव व राव जैतसी के मध्य 1541 ई. को हुआ । इस युद्ध में राव जैतसी मारा गया ।

मालदेव व हुमायूँ

- ➢ शेरशाह से हारने के बाद हुमायूँ जब फलौदी में था, तब उसने मालदेव के पास अपने दूत भेजे ।
- ➢ रायमल सोनीद- अतका खाँ - मीर समेद
- ➢ मालदेव ने भी सकारात्मक उत्तर दिया व हुमायूँ को बीकानेर परगना देने का वादा किया।

- अल्हण ने चालुक्यों की सेवा की थी।
- 1163 ई. में चालुक्यों ने अल्हण को पुनः नाडोल का शासक बन गया था।
- अजमेर के विग्रहराज चतुर्थ ने अल्हण पर आक्रमण कर अल्हण की हत्या कर दी थी।

कीर्तिपाल -
- कीर्तिपाल चौहान अल्हण के पुत्र थे।
- कीर्तिपाल चौहान ने प्रारभ में चालुक्यों की सेवा की थी।
- 1181 ई. कीर्तिपाल ने जालौर में स्वतंत्र चौहान राज्य की स्थापना की थी ।

कल्हण -
- कल्हण ने 1178 ई. में चालुक्य शासक मूलराज द्वितीय के सामंत के सामंत के रूप में मोहम्मद गौरी से युद्ध किया था । इस युद्ध में मूलराज द्वितीय विजय हुए थे ।
- 1205 ई. में जालौर के उदयसिंह सोनगरा ने नाडोल पर आक्रमण कर नाडोल को जालौर में मिला दिय था ।

सिरोही के चौहान
- सिरोही के चौहान सिरोही का प्राचीन नाम अर्बुदांचल था।
- कर्नल जेम्स टॉड ने सिरोही का मूलनाम 'शिवपुरी' बताया है।
- सिरोही में देवड़ा शाखा के चौहानों का संस्थापक लुम्बा था जो जालौर के चौहानों की देवड़ा शाखा का वंशज था।
- लुम्बा ने परमारों से आबू एवं चंद्रावती का क्षेत्र जीतकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की तथा चंद्रावती को अपनी राजधानी बनाया।
- चन्द्रावती गुजरात जाने के मार्ग में स्थित होने के कारण यहाँ पर मुस्लिम आक्रमण होते थे जिस कारण 'शिवभान ने सरणवा पहाड़ी पर दुर्ग का निर्माण करवाया तथा 1405 ई. में शिवपुरी नगर की स्थापना की।
- शिवभान के बाद उसका उत्तराधिकारी सहसमल हुआ जिसने 1425 ई. में सिरोही नगर की स्थापना करके उसे अपनी राजधानी बनाया।
- सहसमल के समय मेवाड़ का शासक राणा कुंभा था, सहसमल ने मेवाड़ के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था।
- राणा कुंभा ने सहसमल के विरुद्ध डोडिया नरसिंह के नेतृत्व में सेना भेजकर वापस अपने क्षेत्रों पर तथा सिरोही के पूर्वी भाग पर अधिकार कर लिया।
- 1451 ई. में लाखा देवड़ा सिरोही का शासक बना। इसने मेवाड़ के अधीन अपने कई क्षेत्र वापस अधिकार में कर लिए जब राणा कुंभा गुजरात व मांडु के शासकों के विरुद्ध अभियान में व्यस्त था।
- लाखा ने मेवाड़ शासक उदा के समय आबू का क्षेत्र भी वापस अपने अधीन कर लिया।
- लाखा ने कालिका माता की मूर्ति सिरोही में स्थापित करवाई। लाखा ने लाखनाव तालाब का निर्माण करवाया।
- यहाँ के शासक जगमाल ने बहलोल लोदी के विरुद्ध युद्ध में मेवाड़ शासक रायमल का साथ दिया।
- जगमाल ने जालौर शासक मजीद खाँ को भी हराया था।
- जगमाल ने सिरोही आये मेवाड़ राजकुमार पृथ्वीसिंह को जहर दे दिया जिस कारण पृथ्वीसिंह की मृत्यु हो गई।
- सिरोही शासक अखैराज को 'उडना अखैराज' के नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने लोयाणा के किले का निर्माण करवाया / 1533 ई. में इसकी मृत्यु के बाद रायसिंह नए सिरोही की गद्दी संभाली थी ।
- रायसिंह ने भीनमाल पर अधिकार करने के लिए आक्रमण किया था जिसके दौरान उनकी मृत्यु हो गई थी। सिरोही शासक महाराव सुरताण ने सिरोही का आधा राज्य अकबर को सौंपकर उनकी अधीनता स्वीकार
- की। अकबर ने सेवा में आये महाराणा प्रताप के भाई जगमाल को यह क्षेत्र दिया था।
- जगमाल ने पूरा सिरोही अपने अधिकार में करने के उद्देश्य से आक्रमण किया।
- 1583 ई. में दोनों सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ जिसमें महाराव सुरताण विजयी हुए तथा इन्होंने सिरोही दुर्ग पर अधिकार प्राप्त कर लिया।
- इस युद्ध में कवि दुरसा आढ़ा उपस्थित थे।
- महाराव सुरताण ने मारवाड़ शासक राव चंद्रसेन को अपने राज्य में संरक्षण दिया था।
- उदयभान अपने पिता महाराव अखैराज द्वितीय को कैद कर स्वयं शासक बन गया मेवाड़ शासक राजसिंह ने
- अपनी सेना भेजकर उदयभान को शासक हटाकर वापस अखैराज द्वितीय को शासक बनाया।
- 1705 ई. में महाराव मानसिंह सिरोही के शासक बने जिन्होंने सिरोही मे पक्के लोहे की तलवारें बनवाना आरंभ करवाया। सिरोही की यह पक्की तलवारें मानसाही नाम से प्रसिद्ध हुई थी । महाराव शिव सिंह के समय 11 सितम्बर 1823 ई. को सिरोही राज्य की सन्धि अंग्रेजों के साथ हुई थी।
- राजस्थान एकीकरण के छठे चरण में जनवरी 1950 में सिरोही का राजस्थान में विलय किया गया था जबकि 1 नवम्बर 1956 को आबू-दिलवाड़ा का भी राजस्थान में विलय कर दिया गया ।

सिरोही

- 1947 को सिरोही गुजरात में मिला दिया गया। गोकुल भाई भट्ट एवं बलवंत सिंह मेहता ने इसका विरोध किया।
- पटेल ने गोकुल भाई भट्ट के गाँव हाथल के अलावा पूरे सिरोही को गुजरात में विलय कर लिया और उस नेहरू को कहा कि, राजस्थानी नेताओं को गोकुल भाई भट्ट चाहिए जो मिल जायेगा ।
- लेकिन भारी विरोध के पश्चात् अन्ततः 26 जनवरी 1950 को सिरोही को वृहद् राजस्थान में मिला दिया गया ।
- आबू देलवाड़ा के संदर्भ में हीरालाल शास्त्री ने कहा था कि गोकुल भाई भट्ट के बिना राजस्थान निर्माण की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

सप्तम चरण

- 1 नवम्बर, 1956 समय 9 : 40 : 27 अजमेर, मेरवाड़ आबू सुनेल टप्पा मंदसौर से लेकर राजस्थान में मिलाया गया तथा बदले में सिरोंज गांव मध्यप्रदेश को दिया गया।
- अजमेर मेरवाड़ केन्द्रशासित प्रदेश था जहां अलग से विधानसभा चलती थी इसे धारा सभा के नाम से जाना जाता था ।
- इसके मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय थे जिन्होंने अजमेर मेरवाड़ के विलय का विरोध किया था ।
- सातवें संविधान संशोधन के वृहद् राजप्रमुख, उप राजप्रमुख, महाराजा प्रमुख पदों की समाप्ति और राज्यपाल का पद सृजित किया गया ।
- सिरोही रियासत का विलय दो चरणों में हुआ था ।
- राजस्थान के एकीकरण का खलनायक कोनार्ड कोर फील्ड़ था ।

कला एवं संस्कृति

अध्याय – 1

राजस्थान की स्थापत्य कला, किले स्मारक महल एवं हवेलियाँ

राजस्थान के किले एवं महल

गागरोन का किला :

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एव आबू नदियों के किनारे स्थित है।
- गागरोण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण डोड परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे 'डोडगढ' भी कहते है एव 'धूलरगढ़' भी कहते है।
- देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव डोड को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था। (चौहान कुल कल्पदुर्ग के अनुसार)

जैत्रसिंह :

- 1303 में जैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।
- संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरौण आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहेब' के नाम से जानते हैं। इनकी दरगाह गागरौण के किले में बनी हुई है।

प्रताप सिंह :

- इन्हें हम संत पीपा के नाम से जानते है। इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरोण पर विफल आक्रमण किया था। संत पीपा की छत्तरी गागरौण में बनी हुई है।

अचलदास :

- 1423 ई. में मालवा का सुल्तान होशंगशाह गागरोन पर आक्रमण करता है। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता है।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।
- लाला मेवाड़ों के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।
- अचलदास खिंची की अन्य रानी का नाम : उमा सांखला (जांगलू)।
- शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंची री वचनिका' नामक ग्रंथ लिखा है।

पाल्हण सिंह (अचलदास का पुत्र, कुम्भा का भांजा):

- 1444 ई. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरौण पर आक्रमण करता है।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है। इस समय गागरौण के किले का दुसरा साका होता है। महमूद खिलजी ने गागरौण का

नाम मुस्तफाबाद रख दिया था। (महासिरे मुहम्मदशाही में इसका जिक्र है)।

- बाद में गागरोण का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।
- 1567-68 ई. के चित्ताड़ आक्रमण के समय अकबर इसके किले में ठहरता है और फैजी इससे मुलाकात करता है।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वीराज राठौड़ को दे दिया। पृथ्वीराज राठौड़ ने इसी किले में 'बेलिक्रिसण रुक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहाँ ने यह किला कोटा महाराजा माधोसिंह को दे दिया था। कोटा महाराजा दुर्जनसाल ने यहाँ मधुसूदन का मंदिर बनाया।
- जालिमसिंह झाला ने यहाँ जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने यहा बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया।
- इस किले में एक जौहर कुण्ड हैं, अंधेरी बावड़ी, गीध कराई (यहाँ राजनैतिक ऊंची पहाड़ी बंदियों को सजा दी जाती थी) है।
- गागरौण का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है। कोटा राज्य की टकसाल यहीं पर थी।

चित्तौड़गढ़ का किला :

- दुर्गों का सिरमौर
- दुर्गों का तीर्थस्थल
- राजस्थान का गौरव
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- 734 ई. में बापा रावल न मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ क किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. मे उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- चित्तौड़ के किले में तीन साके हुए : 1303 में द्वारा रतनसिंह के समय : अलाउद्दीन। 1534 में द्वारा कर्मावती के समय : बहादुरशाह। 1568 में उदयसिंह के समय : अकबर।
- कुम्भा ने कुम्भश्याम/कुम्मा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर बनवाया।
- मोकल ने समिद्वेश्वर मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- बनवीर ने नवलक्खा भण्डार बनवाया।
- बनवीर ने तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में रत्नेश्वर तालाब, भीमलव तालाब, मीरा मंदिर, कालिका मंदिर, लाखोटा बारी आदि प्रमुख है।
- चित्तौड़ का किला मेसा पठार पर मीनाकृति में बना हुआ है। धान्वन दुर्ग को छोड़कर इसमें अन्य सभी विशेषताएँ है।
- यह किला गम्भीरी एव बेड़च नदियों के किनारे बसा हुआ।
- महाराणा कुम्भा ने इसमें 7 दरवाजे बनवाए।
- कुम्भा ने इसमें 'विजय स्तम्भ' (कीर्तिस्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- चित्तौड़ के किले में एक जैन कीर्ति स्तम्भ बना हुआ है।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।

कुम्भलगढ़ का किला :

- महाराणा कुम्भा ने 1448 ई. से 1458 ई. के बीच इसका निर्माण करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार 'मण्डन' था।
- कुम्भलगढ़ वर्तमान राजसमंद जिले में स्थित है।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहते है।
- अत्यधिक ऊंचाई पर बना हुआ होने के करण अबुल फजल ने कहा था कि इस किले को नोचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।
- कुम्भलगढ के शीर्ष भाग में कटारगढ़ बना हुआ है जो कुम्भा का निजी आवास था। कटारगढ़ को 'मेवाड की आँख' कहते है।
- कुम्भलगढ़ के किले में उदा ने कुम्भा की हत्या (मामादेव कुण्ड के पास) की थी।
- उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की छत्तरी बनी हुई है। (12 खम्भों की)।
- पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलढ़ के किले में आयी थी, उदयसिंह का राजतिलक यहीं हुआ था।
- महाराणा प्रताप ने भी अपना शुरुआती शासन कुम्भलगढ़ से चलाया था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ शासकों की 'संकटकालीन राजधानी' कहते है।
- कुम्भलगढ़ के किले में भी कुम्भा स्वामी का मंदिर बना हुआ।
- इसी किले में झाली रानी का मालिया बना हुआ है।
- कुम्भलगढ़ के दीवार की लम्बाई : 36 कि.मी.। चौड़ाई इतनी है कि आठ घोड़े समानान्तर दौड़ सकते है।
- कर्नल जेम्स टोड ने इसकी तुलना 'यूरोप के एट्रस्कन' (सुदृढ़ प्राचीर, बुर्ज एवं कंगरो के कारण)

रणथम्भौर दुर्ग :

- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित है।
- 8वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा निर्मित।
- अण्डाकार आकृति में निर्मित।
- गिरि एव वन दोनों दुर्गों की विशेषता रखता है।
- अबुल फजल : बाकी सब किले नंगे है पर रणथम्भौर दुर्ग बख्तरबंद है।
- हम्मीर के समय जलालुद्दीन खिलजी ने यहाँ एक विफल आक्रमण किया था।

- इस विफलता के बाद खिलजी ने कहा था : ऐसे 10 किलो को में मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझना।
- 1301 ई. : अलाउद्दीन ने रणथम्भोर किले पर आक्रमण किया। उस समय रणथम्भौर का पहला साका हम्मीर के नेतृत्व में हुआ।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध है।
- इस किले में : जोगी महल, सुपारी महल, रणत भंवर (गणेश जी का मंदिर : शादी की पहली कुमकुम पत्री यहाँ भेजी जाती है), पद्म तालाब, जौरा-भौरां महल, पीर सद्दीन की दरगाह।
- अकबर कालीन टकसाल यहाँ स्थित है।

मेहरानगढ़ दुर्ग :

- यह किला जोधपुर में मयूर आकृति में बना हुआ है।
- इसलिए इसे मयूर ध्वज गढ़ भी कहते है।
- इस किले का निर्माण राव जोधा ने 1459 ई. में करवाया था।
- इस किले की नींव करणी माता ने रखी थी।
- मेहरानगढ़ किले की नींव में 'राजाराम' नामक व्यक्ति की बलि दी गई थी।
- मालदेव के समय शेरशाह सूरी ने इस किले पर अधिकार कर लिया था तथा एक मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- मालदेव ने किले में लोहा पोल का निर्माण करवाया था।
- अजीतसिंह ने मुगल खालसे की समाप्ति पर फतेह पोल का निर्माण करवाया।
- मानसिंह ने किले में जयपोल का निर्माण करवाया (इस पोल के दरवाजे को निमाज का ठाकुर 'अमरसिंह उदावत' अहमदाबाद से लाया था)।
- मेहरानगढ के किले मे 'कीरत सिंह सोढा' की छतरी बनी हुई है। (कीरत सिंह सोढा : मानसिंह की तरफ से लडता हुआ मारा गया था)
- जसोल गाँव के कीरत सिंह सोढा, गिंगोली युद्ध के बाद जोधपुर घेरे में मानसिंह की तरफ से लडता है।
- धन्ना : भींवा की छत्तरी बनी हुई है। (मामा-भान्जा की छत्तरी)
- महाराजा सूरसिंह ने मोती महल का निर्माण करवाया।
- सूरसिंह ने ही एक तलहटी महल (अपनी रानी सौभाग्यवती के लिए) बनवाया।
- तख्त सिंह ने 'श्रृंगार चौकी' का निर्माण करवाया, यहाँ जोधपुर के राजाओं का राजतिलक किया जाता था।
- मेहरानगढ़ के किले में तीन तोपें है।
- किलकिला (महाराजा अजीतसिंह अहमदाबाद की सूबेदारी के दौरान लाए थे)
- गजनी खाँ (महाराजा गजसिंह ने जालौर घेरे में प्राप्त की थी)
- शम्भू बाण (महाराजा अभयसिंह सर बुलन्द खाँ (अहमदाबाद) से छीनकर लाते हैं)
- अन्य तोप : भवानी
- जोधा की 'रानी जसमा दे हाड़ी ने 'रानीसर तालाब' बनवाया, जिसे मेहरानगढ़ किले को जलापूर्ति की जाती थी।
- जोधा ने चामुण्डा माता का मंदिर बनवाया था।
- RUDYARA KIPLING : जोधपुर के किले का निर्माण परियों और देवताओं ने किया है।
- मेहरानगढ़ का किला चिड़ियाटूक पहाड़ी पर बना हुआ है।
- जोधपुर के किले में एक फूल महल बना हुआ है जो भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- किले में मान पुस्तक प्रकाश नामक पुस्तकालय है जो मानसिंह ने 1805 ई. में बनवाया।
- 2005 ई. में यूनेस्को अवार्ड दिया गया था।

जैसलमेर दुर्ग :

- जैसलमेर के राजा जैसल (1155 ई.) ने इस किले का निर्माण करवाया।
- जैसलमेर के किले में 99 बुर्जे बनी हुई है।
- जैसलमेर का किला त्रिभुजाकार (त्रिकुट) आकृति में बना हुआ है।
- जैसलमेर का किला अंगड़ाई लेते शेरे के समान प्रतीत होता है।
- जैसलमेर के किले को स्वर्णगिरि का किला कहते है इसे सोनार का किला भी कहते है।
- सत्यजीत रे ने 'सोनार किला' नामक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनायी थी।
- जैसलमेर के किले में दोहरा परकोटा बना हुआ है जिसे कमर कोट कहा जाता है।
- जैसलमेर का किला अपने ढाई साकों के लिए प्रसिद्ध है।
- अबुल फजल ने कहा था : पत्थर की टांगें ही आपको जैसलमेर के किले तक पहुँचा सकती है।
- इस किले में चूने का उपयोग नहीं किया है। जैसलमेर के किले की छत लकड़ी की बनी हुई है।
- बादल महल बना हुआ है।
- जवाहर विलास महल 2009 ई. में जैसलमेर किले में 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।

बीकानेर दुर्ग (चतुष्कोण आकृति) :

- बीकानेर के किले को जूनागढ़ का किला कहा जाता है।
- इस किले का निर्माण महाराजा रायसिंह ने करवाया था।
- इसमें 37 बुर्जे बनी हुई है। जूनागढ़ के किले को 'जमीन का जेवर' कहते है।
- जूनागढ़ में सुरजपोल के पास जयमल फत्ता की मूर्तिया लगी हुई है।
- जूनागढ़ किले में 33 करोड़ देवी देवताओं का मंदिर है।
- बादल महल, अनूप महल : बीकानेर के राजाओं का राजतिलक किया जाता था।
- निर्माण महाराजा डूंगरसिंह ने करवाया था।
- हरमंदिर जूनागढ़ किले चारों तरफ खाई बनी हुई है।

- अबली मीठी का महल
- अमेड़ा महल
- जगमंदिर : दुर्जनसाल ने अपनी रानी ब्रज कंवर के लिए बनाया।

जोधपुर :

- बड़े मियां की हवेली
- राखी हवेली
- पोकरण हवेली
- एक खम्भा महल : महाराजा अजीत सिंह ने बनवाया था।
- राई का बाग पैलेस : 'जसवंत दे' (जसवंत सिंह प्रथम की रानी)
- उम्मेद पैलेस : छीत्तर पैलेस भी कहते हैं। इसका निर्माण अकाल राहत कार्यों के दौरान कराया गया था।
- यह एशिया का सबसे बड़ा आवासीय महल है।
- अजीत भवन पैलेस : राजस्थान का पहला हेरिटेज होटल
- पुष्य हवेली : विश्व की एकमात्र हवेली जो एक ही नक्षत्र पुष्य नक्षत्र में बनी।

डुंगरपूर :

- एक थाम्बिया महल
- जूना महल

अलवर:

- विनय विलास पैलेस : सिटी पैलेस (अलवर)

खैरथल-तिजारा

हवा बंगला : तिजारा

टोंक :

- सुनहरी कोठी : इस्लामिक शैली में निर्मित
- राजमहल : देवली मुबारक महल

जयपुर :

- सलीम मंजिल
- प्यारे मियां की हवेली

बीकानेर :

- रामपुरिया हवेली
- बच्छावतों की हवेली : कर्णसिंह बच्छावत ने बनवायी थी।
- मुंधड़ा हवेली
- मोहता हवेली गजनेर पैलेस (गजसिंह)

अध्याय – 2

राजस्थान के मेले एवं त्यौहार

❖ राजस्थान के प्रमुख मेले

अजमेर के मेले

- **पुष्कर मेला** - यह मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक भरता है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा सांस्कृतिक मेला/ सबसे बड़ा रंगीन/रंग बिरंगा / सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों का आगमन वाला मेला है। ख्वाजा साहब का उर्स - यह उर्स अजमेर में रज्जब माह की 1 से 6 तारीख तक भरता है। अढ़ाई दिन के झोपड़े में।
- **कल्पवृक्ष मेला** - यह मेला मांगलियावास (अजमेर) में श्रावण मास की हरयाली अमावस्या को भरता है।
- **कार्तिक पशु मेला** - यह पशु मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष 2 तक भरता है।

खैरथल-तिजारा के मेले

- **चंद्र प्रभु मेला** - यह मेला तिजारा में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी व श्रावण शुक्ला दशमी को भरता है।

अलवर के मेले

- **नारायणी माता का मेला** - यह मेला बरवा डूंगरी सरिस्का (अलवर) में वैशाख शुक्ल एकादशी को भरता है।
- **हनुमानजी का मेला** - यह मेला पांडुपोल (अलवर) में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी एवं पंचमी को भरता है।
- **भृर्तहरि मेला** - यह मेला भृर्तहरि (महान योगी भृर्तहरि की तपो भूमि) पर अलवर में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को भरता है। यह कनफटे नाथों की तीर्थस्थली है।
- **बिलारी माता मेला** - बिलारी माता का यह मेला बिलारी (अलवर) में चैत्र शुक्ला अष्टमी को भरता है।

बाड़मेर के मेले

- **रणछोड़राय का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के खेड़ क्षेत्र में प्रतिवर्ष राधाष्टमी, माघ पूर्णिमा, बैशाख एवं श्रावण मास की पूर्णिमा व कार्तिक पूर्णिमा भादवा सुदी चतुर्दशी को भरता है।
- **रानी भटियाणी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के जसोल क्षेत्र में कार्तिक वदी पंचमी को भरता है।

बालोतरा के मेले

- **मल्लीनाथ पशु मेला** - यह मेला बालोतरा जिले के तिलवाड़ा क्षेत्र में चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक भरता है।

- **बजरंग पशु मेला** - यह मेला बालोतरा जिले के सिणधरी क्षेत्र में मंगसर वदी तृतीया को भरता है।
- **हल्देश्वर महादेव शिवरात्रि मेला** - यह मेला बालोतरा जिले के पीपलूद (छप्पन की पहाड़ियों के बीच यह मारवाड़ का लघु माउन्ट आबू है।) में शिवरात्रि के अवसर पर भरता है।
- **नाकोड़ाजी का मेला** - यह मेला बालोतरा जिले के नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर में पोष कृष्ण दशमी को भरता है।

बीकानेर जिले के मेले

- **निर्जला ग्यारस मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के लक्ष्मीनाथ मंदिर में ज्येष्ठ सुदी एकादशी को भरता है।
- **जम्भेश्वर मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के मुकाम-तालवा (नोखा) में वर्ष में दो बार - फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है।
- **नागणेची माता का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले में नवरात्रा के अवसर पर भरता है।
- **चनणी चेरी मेला (सेवकों का मेला)** - यह मेला बीकानेर जिले के देशनोक में फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- **कपिल मुनि का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के श्री कोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **करणी माता का मेला** - यह मेला देशनोक (बीकानेर) में नवरात्रा (कार्तिक एवं चैत्र माह में) में भरता है।

बांसवाड़ा जिले के प्रमुख मेले

- **घोटिया अम्बा मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घोटिया (बारीगामा) नामक स्थान पर चैत्र अमावस्या को (जिले का सबसे बड़ा ग्रामीण मेला) भरता है।
- **कल्लाजी का मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के गोपीनाथ का गढ़ा नामक स्थान पर आश्विन सुदी नवरात्रि प्रथम रविवार को भरता है।
- **अंदेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के अंदेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **गोपेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घाटोल के निकट कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **मानगढ़ धाम मेला (आदिवासियों का मेला)** - यह मेला बांसवाड़ा के आनंदपुरी के निकट मानगढ़ धाम में मार्गशीर्ष पूर्णिमा को भरता है।
- राजस्थान में बाँसवाड़ा जिले के मानगढ नामक पहाड़ी क्षेत्र पर संत गोविन्द गुरु के अनुयायी प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा को एकत्रित होते थे । अतः यहाँ इस दिन सभा का वार्षिक मेला लगना प्रारम्भ हो गया। लोग हवन करते हुए घी एवं नारियल की आहुति देते थे। इसमें सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं की चर्चा भी होती थी।
- 17 नवम्बर 1913 (मार्गशीर्ष पूर्णिमा) को मानगढ़ पहाड़ी पर मेला होने वाला था। इसमें गोविन्द गुरु द्वारा अकाल पीड़ित आदिवासियों से लिये जा रहे कर का विरोध करने पर अंग्रेज प्रशासन द्वारा गोलीयों की वर्षा की गई। जिसमें 1500 से अधिक आदिवासी शहीद हो गये। यह नरसंहार कर्नल शटन के नेतृत्व में हुआ। गोविन्द गुरु को गिरफ्तार कर पहले फाँसी उसके बाद में आजीवन कारावास की सजा हुई। 1923 में गोविन्द गुरु जेल से रिहा हुए तथा 30 अक्टूबर 1931 को ग्राम कम्बोई (गुजरात) में देहान्त हुआ। प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा को उनकी समाधी तथा शहीदों के लिए श्रद्धा सुमन अर्पित करने लाखों लोग आते हैं।

चूरू जिले के मेले

- **भभूता सिद्ध का मेला** - यह मेला चूरू जिले के चंगोई (तारानगर) में भादवा सुदी सप्तमी को भरता है।
- **गोगा जी का मेला** - यह मेला चूरू जिले के ददरेवा गांव में भाद्रपद कृष्णा नवमी (गोगानवमी) को भरता है।
- **सालासर बालाजी का मेला** - यह मेला चूरू जिले के सालासर (सुजानगढ़) में चैत्र व कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

बारां जिले के मेले

- **सीताबाड़ी का मेला (धार्मिक व पशु मेला)** - यह मेला बारां जिले के सीताबाड़ी, केलवाड़ा (सहरिया जनजाति का कुम्भ) नामक स्थान पर ज्येष्ठ अमावस्या (इस मेले में सहरियाओं का स्वयंवर होता है) को भरता है।
- **डोल मेला** - यह मेला बारां जिले के डोल तालाब पर जलझूलनी एकादशी (भाद्रपद शुक्ला एकादशी) को भरता है। इसमें देवविमानों सहित शोभायात्रा निकलती है।
- **ब्रह्माणी माता का मेला** - यह मेला बारां जिले के सोरसन में भरता है। यहां पर गधों का मेला भी लगता है।
- **फूलडोल शोभा यात्रा महोत्सव (श्रीजी का मेला)** - यह मेला बारां जिले के किशनगंज में होली (फाल्गुन मास की पूर्णिमा) के दिन भरता है।
- **कपिल धारा का मेला** - यह मेला सहरिया क्षेत्र (बारां) में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

डीग के मेले

- **गंगा दशहरा मेला** - यह मेला डीग जिले के कामां क्षेत्र में ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी से द्वारदशी तक भरता है।
- **बृज महोत्सव** – यह मेला द्वादशी से माघ शुक्ल – डीग जिले में भरता है ।

अध्याय – 8

राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण

राजस्थान में पुरुष वस्त्र (वेशभूषा)

- **पगड़ी**- इसको पाग, पेचा, फालियो, साफा, घुमालो, फेंटो, सेलो, अमलो, लपेटो, बागा, शिरोत्राण, फेंटा आदि नामो से भी जाना जाता है। यह सिर पर लपेटे जाना वाला लगभग 5.5 मीटर लम्बी एवं 40 सेमी. चौड़ी होती है। उदयपुर की पगड़ी तथा जोधपुर का साफा प्रसिद्ध है। युद्ध भूमि में केसरिया पगड़ी, दशहरे पर काले रंग की मंदील पगड़ी, होली पर फूल-पत्तियों वाली पगड़ी, विवाह पर पंचरंगी पगड़ी, श्रावण में लहरिया पगड़ी पहनी जाती है। रक्षाबंधन के अवसर पर बहिन भाई को मोठड़ा साफा देती है। मीणा एवं गुर्जर जाति की पगड़ी को फेटा कहते हैं।
- **धोती**- पुरुष द्वारा कमर से घुटने तक पहना जाने वाला वस्त्र है। आदिवासियों/भीलों द्वारा पहनी जाने वाली धोती ढ़ेपाड़ा/डेपाड़ा कहलाती है। सहरिया जनजाति के लोग धोती को पंछा कहते है।
- **अंगरखी/बुगतरी** - पूरी बाहों का बिना कॉलर एवं बटन वाला कुर्ता जिसे बांधने के लिए कसें (डसें) होती है। यह प्रायः सफेद रंग का होता है जिस पर कढ़ाई की होती हैं ।
- **पोतिया** - भील पुरुषों द्वारा पगड़ी के स्थान पर बांधा जाने वाला वस्त्र पोतिया कहलाता है।
- **शेरवानी**- शादियों में पुरुषों द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र जो घुटने से लम्बा एवं कोटनुमा होता है।
- **पायजामा** - अंगरखी, चुगा और जामें के नीचे कमर व पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र पायजामा कहलाता है।
- **टोपी**- यह पगड़ी की जगह सिर को ढकने का वस्त्र होता है।
- **कमीज**- ग्रामीण क्षेत्र में पुरुषों द्वारा धोती (कमर) के ऊपर पहने जाने वाला वस्त्र ।
- **चुगा** - इसे चोगा भी कहते है। यह अंगरखी के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता है।
- **आतमसुख** - तेज सर्दी से बचने के लिए शरीर पर ऊपर से नीचे तक पहने जाने वाला वस्त्र।
- **बिरजस (ब्रिजेस)** - यह पायजामे के स्थान पर पहना जाने वाला चूड़ीदार वस्त्र होता है।
- **कमरबंध**- इसे पटका भी कहते है। यह जामा के ऊपर कमर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र होता है, जिसे तलवार या कटार को फंसाया जाता है ।
- **पछेवड़ा** - तेज सर्दी में ठण्ड से बचाव के लिए पुरुषों द्वारा कम्बल की तरह ओढ़े जाने वाला मोटा सूती वस्त्र पछेवड़ा कहलाता है।
- **अंगोछा** - धूप से बचने के लिए पुरुषों द्वारा सिर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र अंगोछा कहलाता है।

राजस्थान में महिलाओं (स्त्रियों) के वस्त्र / वेशभूषा

- **कुर्ती और कांचली** – स्त्रियों द्वारा शरीर के ऊपरी हिस्से (कमर के ऊपर) पहनी जाती है। कांचली के ऊपर कुर्ती पहनी जाती है, जिसमें कांचली के बांहें होती है जबकि कुर्ती के बांहें नहीं होती है।
- **घाघरा** - इसे लहंगा, पेटीकोट, घाबला आदि नामो से भी जाना जाता है। यह कमर से नीचे एड़ी तक पहना जाने वाला घेरदार वस्त्र होता है, जो कलियों को जोड़कर बनाया जाता है। आदिवासियों के घाघरे को कछाबू कहते है। आदिवासियों के नीले रंग के घाघरे को नांदना कहते है। रेशमी घाघरा जयपुर का प्रसिद्ध है।
- **ओढ़नी (लुंगड़ी)** - महिलाओं द्वारा यह सिर पर ओढ़ी जाती है। लहरिया, पोमचा, धनक, चुंदरी, मोठड़ा आदि लोकप्रिय ओढ़नियां है। डूंगरशाही ओढ़नी जोधपुर की प्रसिद्ध है। ताराभांत की ओढ़नी आदिवासी महिलाओं द्वारा ओढ़ी जाती है।
- **लहरिया** - यह श्रावण मास की तीज को पहने जाने वाली अनेक रंगों की ओढ़नी है। समुंद्री लहर नामक लहरिया जयपुर में रंगा जाता है।
- **मोठड़ा**- जब लहरिया की धारियां एक-दूसरे को काटती हुई बनाई जाती है, तो वह मोठड़ा कहलाती है। मोठड़ा जोधपुर की प्रसिद्ध है।
- **सलवार**- कमर से लेकर पांवों में पहना जाने वाला वस्त्र सलवार कहलाता है ।
- **कुर्ता**- यह शरीर के ऊपरी हिस्से पर पायजामा के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता है।
- **कटकी**- अविवाहित व आदिवासी युवतियां द्वारा ओढ़ी जाने वाली ओढ़नी कटकी कहलाती है।

आदिवासी महिलाओं के वस्त्र

- तारा भांत की ओढ़नी
- केरी भांत की ओढ़नी
- सावली भांत की ओढ़नी
- लहर भांत की ओढ़नी
- ज्वार भैंट की ओढ़नी
- लूगड़ा
- **रैंजा** - सहरिया स्त्री का विवाह वस्त्र
- **चूनड़** - यह एक ओढ़नी होती है, इसमें बिंदियों का सयोंजन होता है।
- **नौंदना** - यह आदिवासी महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र होता है।
- **रेनसाई** - लहंगे की छींट जिसमें काले रंग पर लाल एवं भूरे रंग की बूटियां होती है।
- **जाम साई साड़ी** - यह विवाह के समय पहना जाने वाला वस्त्र होता है, इसमें लाल जमीन पर फूल-पत्तियां होती है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/ZgzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/r46kn5 1 web.- https://shorturl.at/gilw7

FREE SAMPLE

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
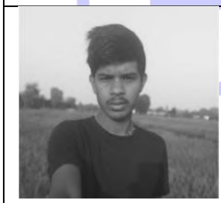	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
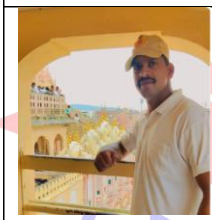	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/r46kn5

Online Order करें - https://shorturl.at/gilw7

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO